आत्मा का धर्म बताया प्रजापिता ब्रह्मा ने

18 जनवरी, को ब्रह्माकुमारीज् आध्यात्मिक संस्था के संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा इनका स्मृती दिन समूचे विश्व में विश्वशान्ति दिवस के रुप में मनाया जाता है । उनके अलौकिक कार्य तथा महाविचारों का विशेष लेख ।

भगवान उवाच : `यदा-यदा हि धर्मस्य....` के अनुसार जब-जब संसार में दिव्यता की कमी, चारित्रिक पतन, धर्म ग्लानि, समाजिक अन्याय, अनाचार व शोषण बढ़ता है, तब धरती पर स्वर्ग की स्थापना के लिए परमात्मा वचनबद्ध है। सुख, शान्ति, प्रेम, ऐश्वर्य व आनन्द के सागर कल्याणकारी (शिव) परमपिता परमेश्वर के अवतरण आधार प्रजापिता ब्रह्मा का दिव्य व अलौकिक जन्म इसी कारण हुआ है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना परम आवश्यक है कि ब्रह्मा परमात्मा, भगवान नहीं वरन सर्वशक्तिमान, निराकारी शिव पिता का साकार माध्यम है।

सन् 1876 में अखंड भारत के हैदराबाद (सिंध) के एक मध्यमवर्गीय परिवार में जब बालक लेखराज जन्मा तो कदाचित ही किसी ने सोचा होगा कि यह बालक महान समाज सुधारक, मानवता का पुनस्थापिक और अलौकिक व्यक्तित्व सिद्ध होगा।`होनहार बिरवान के होत चिकने पात` के अनसार लेखराज प्रारंभ से ही कुशाग्र बुद्धि, कठोर परिश्रमी और अध्यवसायी थे। वे देखते ही देखते एक साधारण व्यवसायी से हीरे-जवाहरातों के नामी-गिरामी सौदागर के रूप में ख्यात हो गए। अपने व्यापार के सिलसिले में वे खूब घूमे। उनका अनेक राजा-महाराजाओं, रियासतदारों, अमीरों से संपर्क हुआ, इस पर भी अहम् की भावना उन्हें कभी छू न पाई। विनम्र स्वभाव, शिष्टाचारपूर्ण व्यवहार तथा ईमानदारी के कारण अपने ग्राहकों में वे न केवल बड़े लोकप्रिय थे, वरन उन्हें बड़े सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। उन्हें श्रद्धा और स्नेह से सब `दादा` कहते थे।

लगभग 60 वर्ष की उम्र तक लौकिक गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए दादा ने खूब धन और यश कमाया। लौकिक उन्नती के चरम शिखर पर पहुँचने के बाद दादा लेखराज को अचानक संसारिक वस्तुओं से वैराग्य होने लगा। वे अंतर्मुखी हो गए। एकांत में रहकर बहुत अधिक चिंतन-मनन करने लगे। एक दिन सत्संग में बैठे हुए उन्होंने प्रथम बार विष्णु चतुर्भज का साक्षात्कार किया। अभी तो यह आगाज था, अब अक्सर उन्हें दिव्य साक्षात्कार होने लगे और वे अलौकिक आनंद का अनुभव करने लगे। भावी महाविनाश और आगामी सतयुगी सृष्टि के साक्षात्कार करने के बाद उन्होंने परमपिता निराकार शिव का भी साक्षात्कार किया। शिव परमात्मा ने उन्हें दैवीय सृष्टि की स्थापना के लिए साकार माध्यम बनाया, अतः स्वयं शिव ने उन्हें `प्रजापिता ब्रह्मा` नाम दिया।

परमात्मा द्वारा नई दुनिया के निर्माण की प्रेरणा मिलने पर `ब्रह्मा बाबा` ने अपना सारा व्यावसायिक कारोबार बंद किया और जीवनभर अर्जित की गई संपत्ति के साथ अपना संपूर्ण तन, मन, धन, समय, संकल्प, श्वास, संबंध-संपर्क इत्यादि ईश्वरीय ज्ञान के प्रचार-प्रसार में लगा दिया। सत्य ज्ञान के प्रसार के लिए दादा ने सदियों से दमित, पीड़ित नारियों को नेतृत्व देकर एक न्यास की स्थापना की। सत्संग के लिए `ओम् मंडली` का निर्माण किया गया। प्रारंभ में इसमें समाज की दुःखी, पीड़ित महिलाएँ आती थीं तथा ज्ञानामृत पीकर सुखी और शांत होकर लौटती। धीरे-धीरे उनका इतना प्रचार हुआ कि प्रायः सभी वर्ग की स्त्रियाँ सत्संग का लाभ लेने लगी। यहाँ गीता का सत्य और व्यावहारिक शिक्षण के साथ काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि विकारों पर विजय पाकर सात्विक जीवन जीने के उपदेश दिए जाते थे। तमाम खास ओ-आम को ईश्वरीय पैगाम देने और सतयुगी दैवीय सृष्टि की स्थापना के लिए कालांतर में `ओम् मंडली` ही प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के रूप में जानी जाने लगी हैं। ओम मंडली के प्रारंभिक दिनों से ही रूढ़िवादी, कट्टरपंथियों ने अनेक बार इसके विरुद्ध दुष्प्रचार किया। यहाँ तक कि दादा लेखराज के पवित्र जीवन पर भी मनगढ़ंत एवं झूठे आरोप लगाए गए। इस पर भी उनके चेहरे से रूहानी खुशी गायब नहीं हुई। वे सदैव शांत और प्रसन्नचित्त ही रहे। विरोधियों के प्रति घृणाभाव एवं चिंता की रेखा कभी उनके चेहरे पर दृष्टिगोचर न हुई। ऐसी अगाध आस्था थी उनकी परमात्मा में। वे अध्यात्म के प्रचारक थे तथा एक ही धर्म बताते थे- आत्मा का धर्म। वे कहते-शान्ति आत्मा का स्वभाव है। अनेक धर्म होने से वैमनस्य बढ़ता है। अपने मूल स्वरूप को पहचानने से भेदभाव स्वतः समाप्त होता है और विवाद की वाही कोई गुंजाइश ही शेष नहीं रहती बल्कि सर्वत्र एकता और सद्भावना की स्थापना हो सकती है।

18 जनवरी 1969 तक सशरीर एवं तत्पश्चात अव्यक्त रूप से दैवीय कुल की स्थापना सन्नद्ध ब्रह्मा बाबा द्वारा आंरभ किया पावन कार्य अभी भी चल रहा है। विश्व के पाँचों महाद्वीपों के 86 देशों में 6500 से अधिक सेवा केन्द्रों के माध्यम से मानवता की सेवा में अहर्निश संलग्न ब्रह्मा बाबा की हजारों भुजाओं को देखा जा सकता है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com